Review of Literature

International Recognized Multidisciplinary Research Journal

ISSN: 2347-2723 Impact Factor : 2.0210(UIF) Volume - 3 | Issue - 8 | March - 2016

स्वरयात्री के. एल. सैगल : एक अभ्यास

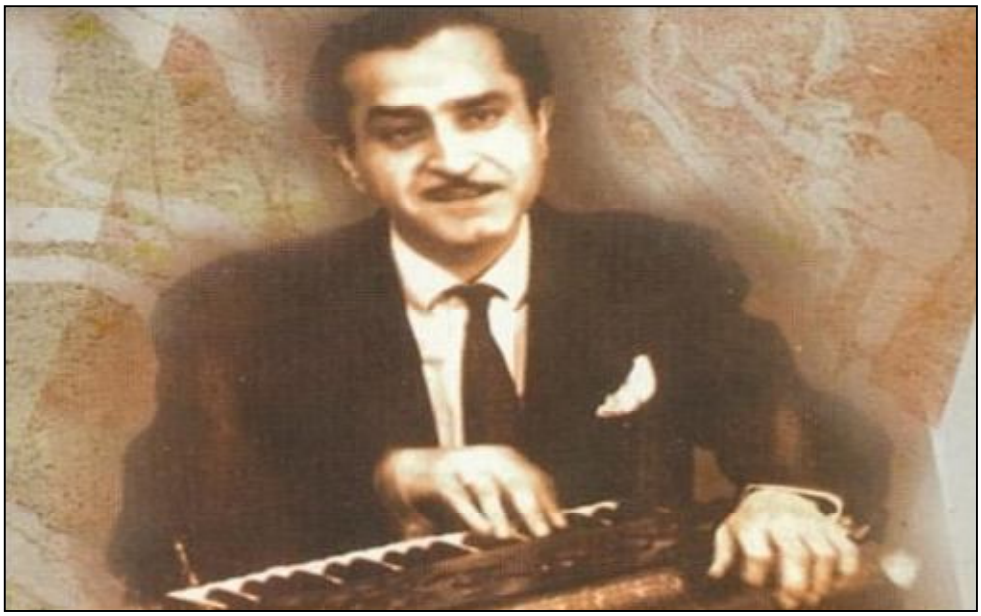

प्रा. डॉ. मीनल ठाकरे

संगीत विभाग प्रमुख,महात्मा ज्योतिबा फुले महा.,

अमरावती (महाराष्ट्र)

सारांश :

सन 1930 और 1940 के मध्ये फिल्म निर्माण की प्रक्रिया तेज हुई। संगीतकार गायक गीतकार तथा नाटक के प्रेमी सभी फिल्मों की ओर आकर्षित हुये, तथा अपना प्रचार चाहने लगे। फिल्म कंपनी ने उत्कृष्ठ संगीत देना शुरू किया। स्त्री पार्श्व गायिकाओं की अपेक्षा पुरूष गायकों की संख्या अधिक थी, स्वाभाविक आवाज में जिन गायकोंने गीत गाये, उनमें शमशाद बेगम, सुरैया, नुरजहाँ और कुन्दनलाल सैगल का नाम उल्लेखनिय है, जिन्होने अभिनय करते हुये अपने संगीत स्वर को भी कायम रखा। सभी गायकों में सर्वश्रेष्ठ गायक कुन्दनलाल सैगल का नाम लिया जाता है। कुन्दनलाल सैगल द्वारा गाये गये शास्त्रीय संगीत पर आधारीत गीत कई गाये जैसे (मै क्या जानु क्या जादू रागन्यमन, अवसर बित जात प्राणि यॉ भजन, राग-बिहीग, झुलना झुला ओरी-आसावरी, रूमझुम रूमझुम- राग शंकर, तथा फिल्म तानसेन की बहारर राग मे गाया गया गीत तथा 'बाबुल मोरा नैहर छुटोरी'- राग भैरवी मे गाया गीत सैगल की पहचान बन गया। राग भैरवी परबना, यह पारम्पारीक गीत श्रोताओं के हृदय में जा बसा। सैगल की गायकी में सरलता, मधुरता और गहराई थी, जो अन्य भारतीय गायकों में दूर्लभ है।

प्रस्तावना :

संगीत का उद्‌भव मानव की उत्पत्ति के साथ ही हुआ है। प्रकृती के पार्श्व से मनुष्य को प्रेरणा दी जिससे कलाओं का उदय हुआ।

सन 1930 और 1940 के मध्य फिल्म निर्माण की प्रक्रिया तेज हुई। नाटकों के पात्र और संगीतकार सभी फिल्मों की ओर आकर्षित होकर उसी के माध्यम से अपनी कला का प्रचार चाहने लगे। बंगाल और महाराष्ट्र ने इस दिशा में उल्लेखनिय कार्य किये तथा कलकत्ता की न्यु थिएटर्स लि. और पूजा की प्रभात फिल्म कंपनी ने उत्कृष्ट फिल्म संगीत देने का प्रयास किया। सभी अभिनेता तथा अभिनेत्रीयों को अभिनय के साथ-साथ गाना भी पडता था।

इस काल की प्रमुख गायिकाओं मे जो नाम उभरे वे इस प्रकार है- बिब्बो, कज्जन, अमीरबाई, मुन्नीबाई, खुर्शीद गुलाब, जोहरा बेगम अख्तर और एम. एस. सुब्बुलक्ष्मी। पुरूषों में आलमआरा फिल्म के गायक डबल्यु. एस. खान औरर मास्टर निसार के नाम लोगों की जुबान पर थे। स्त्री पार्श्व गायिकाओं की अपेक्षा पुरूष गायकों के कंठ और तरीके में बहुत विविधता मिलती थी जो की पुरूष गायकों की संख्या स्त्री गायीकाओं से अधिक थी।

माइक्रोफोन के लिए स्वाभाविक आवाज में जिन गायकोने गीत गाये उनमे शमशाद बेगम सुरैया, नुर जहाँ और कुन्दनलाल सैगल का नाम उल्लेखनीय है। जिन्होने अभिनय करते हुए अपने संगीत स्वर को भी कायम रखा। नासिका के स्वर से गीत प्रस्तुत करने की अपनी एक प्रणाली बना ली थी लेकीन उस समय की जनता को ईसका आभास नही होता था। वह कल मिठासभरे गीत सुनकर ही तृप्त हो जाते थे। उपरोक्त सभी गायकों मे सर्वश्रेष्ठ गायक कुन्दनलाल सैगल का नाम लिया जाता है। अभिव्यक्त करनेकी तकनीक उन्हे हासिल थी। उन्होने शास्त्रीय राग संगीत पर आधारीत कई गीत गाकर व फिल्म जगत के सितारे बन गये। कुन्दनलाल सैगल यह आँठ अक्षर जैसे सप्तक मे का प्रथम सा तथा तार सां मिलाके आंठ स्वर संगीतप्रेमीयों के लिये मंत्रों के समान है। महान गायक नट या उपाधी से ही बढकर तारस्थान होनेवाला यह स्वर अपनी जादूई आवाज से श्रोताओं के हृदय में बसे केवल पंधरह-सोलक वर्ष के कालखंड मे कुन्दनलाल सैगल साहब ने संपूर्ण संगीत सृष्टीपर अपनी पहचान बनाई।

कुन्दनलाल सैगल द्वारा गाये गये शास्त्रीय संगीत पर आधारीत चुनींदा गीतों में क्या जाने क्या जादू है, यह गीत मे कष्ठ की विशेषताओं का पता लगता है। क्रियमन राग पर आधारित यह गीत एक चमत्कारी है। पहली पंक्ती मे दोनों बार प्रयुक्त 'क्या' शब्द यमन राग की आरोही अवरोही ली गई जगह अपने चित्त को गीत की ओर आकर्षित कर लेती है। 'जब नैन मिले नैनो से कहाँ' इस पंक्ती में आया खर्ज स्वर सुननेवालों के हृदय को स्थिरता प्रदान करता है।

सैगल का अपनी गायकी पर पूरा अधिकार था। अद्‌भुत अनुभुती लुभावने ढंग से सैगल द्वारा गाए भजनों मे एक एहसास होता है। फिल्म 'पूरन भगत' मे गाया गया भजन 'अवसर बीतों जात प्राणि' भक्ती भावना से ओतप्रोत कीर्तन की भांती प्रस्तुत उनकी गायकी का श्रोताओंपर रोमांचकारी प्रभाव पडता था। इस भजन को बिहाग राग की स्वरों की देन थी। सैगल साहब के श्रेष्ठ भजनों के क्रम में आता है।

सैगलजी ने 'घुलना झुलावो...' यह गीत इतने मनोयोग से गाया था कि कोई भी उनके शास्त्रीय ज्ञान को नकार नही सकता था। उन्होंने शास्त्रीय संगीत की स्थापित परंपरा से हटकर इस गीत मे किया हुवा एक अनुठा प्रयोग-आलाप तो शुद्ध आसावरी मे लिया परंतु गीत को गांधारी मे गाया जबकि नियमानुसार जिस राग मे आलाप लिया जाता है, उसी राग में हि गीत भी प्रस्तुत किया जाता है। सैगल ने जानबूझकर इस परम्परा से हटकर गीत की दूसरी पंक्ती 'कोयल बोले रामा' को गांधारी मे गाया, जिससे मन को सुकून मिलता है और गायकी की उच्चता महेसूस होती है।

फिल्म 'तानसेन' का गीत 'रूमझुम-रूमझुम', 'चाल तिहारी ताल' त्रिताल मे गाया गया है। राग शंकरा स्वराकृती में बंदीश के समान लय निर्माण करता है। धर्ती की चाल दर्शाता है। रूमझुम रूमझुम यह शब्द नि ध सां सां नि ध प प स्वरों मे बांधकर शंकरा राग का पूर्ण रूप से साक्षात्कार किया है। इसी प्रकार 'तानसेन' का राग 'बहार' पर आधारी तथा त्रिताल मे गाया गया गीत ऐसा लगता है जैसे पार्श्व संगीत सम से शुरू किया तो एक गीत सम सेही होना परंतु गाने के शब्द काल से शुरू किये। इसमे श्रोताओं का अपेक्षा भंग किया लेकीन यह अपेक्षा भंग श्रोताओं को आनंद प्रदान करता है। इस गाने मे बजने वाला पार्श्व संगीत ही बहार राग का माहौल तयार कर गाने के शब्द सुनने की इच्छा बढा देता है। मधूर आवाज और गानों की मकबुलियत के अलावा सैगल को जिन्दगी मे अहम दर्जा हासिल हुआ तो खास तौर पे इसलिए कि जितनी आसानी से सांस लेता था, उतनी की आसानी से गाता और जजबात पेश करने का अन्दाज इस कदर कारगर था कि हरर स्वर सितारो की तरह चमकता था।

सैगल साहब के आवाज की खुबसूरती मंद सप्तक से (बिना पंख पंछी हुँ मै....। तानसेन) लेकर तार सप्तक जैसे 'प्रेम का है इस जग मे पथ निराला...। प्रेसीडेन्ट' पाया जाता था। बाबुल मोरा (स्ट्रिट सिंगर 1938) गीत सैगल की पहचान बन गया। राग भैरवी पर बना यह पारम्पारिक बिदाई गीत सैगल के पहले और सैगल के बाद भी मशहुर गायकों ने गाया, लेकीन सैगल के मुकाबले सब पिछे रहे। 'बाबुल मोरा' इस प्रसिद्ध भैरवा की अतिता, विषण्णता, व्याकुलता श्रोताओं के मन पे सकारात्मक प्रभाव निर्माण करती है। यही कारण रहा की सैगल ने काफी समय तक फिल्म संगीत के क्षेत्र में अपना वर्चस्व

कायम रखा। संगीतकार तिमीर बरन के अनुसार सैगल की गायकी मे सररलता और गहराई थी, जो अभ्य भारतीय गायकों मे दुर्लभ है।

संगीतकार नौशाद साहब की चार पंक्तीयाँ समर्पीत...

ऐसा को फनकारे-मुकम्मल नही आया,
नगमों का बरसाता बादल नही आया।
संगीत के माहिर तो बहुत आये है,
दूनिया में कोई दूसरा 'सैगल' नही आया।।

निष्कर्ष :

कुन्दन सैगल ने कई हिंदी फिल्मों मे नटगायक के रूप मे अपनी कलाकारी तथा शास्त्रीय राग संगीत पर आधारित गीतों को गाकर अपना एक स्वतंत्र युग निर्माण किया। शास्त्रीय संगीत की दिलचस्पी निर्माण करनेवाला एक गुणी कलाकार था। यह आनेवाली पिढी को ज्ञात होगा।

कुन्दनलाल सैगल को भारत के सबसे प्रसिद्ध गायक के रूप में माना जा सकता है। मृत्यु के कई दशकों बाद भी पीढी-दर-पीढी उनके गीत पसन्द किये जा रहे है और लाखो संगीत-प्रेमी आज भी उन्हे एक अद्वितीय गायक अभिनेता के रूप में याद करते है। उनके ढेरों गीत और फिल्मे संगीत के जुनून से सराबोर राष्ट्र की एक धरोहर के रूप में मौजूद है।

सिने विद्या से जुडी अनेक फिल्मी छतीयाँ एवं हिंदी फिल्मी गीतो पर शोध करनेवाले अनेक शोधार्थीयों को यह जानकारी उनके अभ्यास के हेतु तथा सैगल संगीत धारा अविरत प्रवाहित रहने हेतु यह अनमोल रूपी धन को आगे आने वाली पिढी उसका जतन करे। उन्होंने शास्त्रीय संगीत के रागों पर आधारीत फिल्मी गीतों को गाकर फिल्म जगत की और सामान्यजनों को आकृष्ट कीया और फिल्म जगत मे अमर हो गये। मानो शास्त्रीय संगीत ने ही उनको फिल्म जगत का मुकूटमणी बना दिया।

संदर्भ ग्रंथ सुची :-

१. डॉ. अनघा थत्ते- संगीतातील संशोधन पद्धती, संस्कार प्रकाशन, मुंबई, प्रथम आवृत्ती, 16 मार्च 2010
२. मुकूंद श्रोती- गीत माला, प्रकाशक : नंदिनी संतोष तांबोळी, पूणे, 18 मार्च 2010
३. लावण्य किर्तीसिंह काव्या- हिंदी चल चित्रपट जगत के सफलतम संगीत भाग-1, निर्देशक लक्ष्मीकांत प्यारेलाल, प्रकाशक : काने, प्रथम आवृत्ती- 2008
४. हरर मन्दिर सिंह हमराज हरीष रघूवंशी- जब दिल हि टूट गया- कुन्दनलाल सैगल
५. गंगाधर महाम्बरे, सैगल, पद्मगंधा प्रकाशन, पूणे
६. विनय वावडेकर- सैगल स्वरविलास, प्रकाशक : विणा वावडेकर, प्रथम आवृत्ती, 18 जानेवारी 2016
७. रमेश देसाई, सैगल स्वरयूगय मॅजेस्टीक प्रकाशन, गिरगांव मुंबई, प्रथम आवृत्ती 1999